॥ श्री गिरिराजधरण जयति ॥

शुक-विलास

लेखक -
पं. तोताराम शर्मा 'शुक'
(कार्यरत-आकाशवाणी-मथुरा)

प्रकाशक :
ब्रज विलास प्रकाशन
८०, ब्रज विलास, बाँकेबिहारी कालौनी
रमणरेती मार्ग, वृन्दावन-२८११२१ (मथुरा) उ.प्र.
मो.

प्रकाशन एवं प्राप्ति स्थल : ***ब्रज विलास प्रकाशन***
ब्रज विलास, ८०, बाँकेबिहारी कालौनी
रमणरेती मार्ग, वृन्दावन (मथुरा)

सम्पादक : ***भक्ति विजय*** एम.ए.
संस्करण : द्वितीय
प्रकाशन तिथि :
प्रकाशकाधीन : सर्वाधिकार सुरक्षित
न्यौछावर :
प्रिन्टर्स :

प्राप्ति स्थल -

॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय ॥

अपनी बात

'होत है जो गोपाल ठटी'

श्रीमद्भागवत के माहात्म्य में ठाकुर की दो प्रकार की लीलानकौ निरूपण कियौ है-

'लीलैवं द्विविधा तस्य वास्तवी व्यवहार की।'

प्रथम वास्तवी लीला, जाकूं ठाकुर के प्रिय रसिक भक्तजन ही देखि पावैं हैं। जगत् में जो देखिवे में आवै है, यह व्यवहार की लीला है। ठाकुर अपनी या लीला सृष्टि में, कब, कहाँ, कैसें, कितनौ, कौनसौ कार्य करैहै, याकूँ कोई नाय जानै।

'तथापि यावता कार्यं तावत् तस्य करोति हि।'

(षौडश ग्रन्थ)

अधिकार भेद सौं न्यून्याधिकता राखिते भये जाते जितनौ कार्य करानौं है, यह सब ठाकुर की इच्छा पै ही निर्भर है। (निज इच्छातः करिष्यति) उदाहरण -

'मृषा होय मम शाप कृपाला। मम इच्छा कहै दीनदयाला॥'

(रा.च.मा.)

'शापो मयैव निमि तस्तद्वैत विप्राः।'

(भा. ३-१६-२६)

ऐसेंहीं ठाकुरनें प्रेरणा करि या लघु-पुस्तककूं प्रकाशित करिवेकौ हेतु सन्त श्रीबिहारीदास वृन्दावनीजी (सम्पादक बाबा) कूँ बनायौ है। गतवर्ष श्रावण मास में सम्पादक बाबा कूँ कछू अपनी कवित्त रचना सुनायवे लग्यौ, सुनते ही बाबा बोले कि, काव्य की शोभा, सुरक्षा और महत्ता वाके मुद्रण हैवे पै ही होय है। बाबा के वाक्य सुनिकैं मैं मौन ह्वैकें विचारवे लग्यौ, 'पइसा नाँय पास मेला लगै उदास।' कछू दिना पीछें मोकूं सम्पादक बाबा की बात

याद आई, विचार करिकें मैं मुद्रक (प्रेस) वारे ते मिल्यौ। फिर अपनी जेबहू टटोरिकें देखी, कर्र-मुर्र करिकें कार्य में सम्भावना जान परी फिर मैं बाबा के पास ग्राम-अकबरपुर जाय सब बात कहि सुनाई। सम्पादक बाबानें पुस्तकौ नामहूँ (शुक-विलास) धरि दियौ। ठाकुर की ऐसी लीलान सौं प्रतीत हाये है, जैसौ श्रीसूरदासजीनैं गायौ है-

'होत है जो गोपाल ठटी।'

एकबार तौ या गोपालनैं ऐसी ठानी कि इन्हीं सम्पादक बाबा के संरक्षण में रास-संगीत विषयकूं लै, गद्य में एक पुस्तक लिखी, ता पूरी पुस्तक कूं बन्दर लै गयौ। एक पन्नाहूँ खोजिवे पै नाहि मिल्यौ, लेखकजी की सगरी बुद्धि, ज्ञान, कर्मठता सब धूर में मिल गई, लिखलै बेटा बड़ौ लिखैया बनैहौ। ठाकुर की या लीला सौं हूँ ऐसौ प्रतीत होय है-
'करी गोपाल की सब होय।'

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीनें हूँ यही गायौ है-

बोले विहँसि महेश तव ज्ञानी मूढ़ न कोय।
जो कछु जस रघुपति करहिं सो तस तिहि छिन होय॥

यह लघु-पुस्तिका ठाकुर के विविध विलासन सौं सँजोई गई, सन्त, भक्त एवं साहित्य प्रेमीन के कर-कमल में सादर समर्पित है। यामें-

कवित्त विवेक एक नहि मोरे। सत्य कहौं लिखि कागज कोरे॥
कवि न होउँ नहि चतुर प्रवीनू। सकल कला सब विद्या हीनू॥
जानि कृपा करि किंकर मोहू। करियै कृपा छाँड़ि छल छोहू॥

दोहा -

अपने अरु निज जनन के गुनगुन वरनन हेत।
सुमति देअ सुचि साँवरौ भव तारन चित चेत॥
भक्ति न ज्ञान विराग जुत भाषा गुन नहिं एक।
यह 'विलास' ब्रजचन्द कौ एतौ जानि विवेक॥

- पं. तोताराम शर्मा 'शुक'

॥ सबकूं हमारी जै श्रीकृष्ण॥

आशीष-वचन

प्रिय एवं पूज्य पं. श्रीतोतारामजी 'शुक' के ब्रजरस, घुटी में ही प्राप्त रहा है। आप अपने समय की प्रख्यात रासमण्डली के संचालक श्रीलक्ष्मण स्वामी के सुपुत्र तो हैं ही, रासलीला के स्वरूप भी रह चुके हैं। साथ ही श्रीमद्वल्लभ सम्प्रदाय में श्रीद्वारकेश बाबा (पोरबन्दर) से दीक्षित भी हैं।

इससे पूर्व भी आपकी दो-एक प्रकाशित, अप्रकाशित रचनायें मेरे देखने में आ चुकी हैं। प्रस्तुत रचना "शुक-विलास" आपके कर-कमलों में है। यह विषय के अनुरूप विभिन्न विलासों में विभक्त है।

निज कवित्त केहि लाग न नीका।
सरस होय अथवा अति फीका॥
जे पर भनिति सुनत हरषाई।
ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं॥

सहृदय पाठकवृन्द आप स्वयं ही रचना का मनन और रसास्वादन करें। यूं युग के अनुसार आज के पाठकों की रुचि में बहुत बदलाव आ गया है फिर भी इस प्रकार के सहृदय पाठकों की भी कमी नहीं है जो इसे पढ़-सुनकर आह्लादित होंगे। मैं तो अपने लिए इसे एक भगवत् प्रसाद स्वरूप ही समझता हूँ। किमधिकम् विज्ञेषु।

दिनांक :

बिहारीदास वृन्दावनी
(सम्पादक बाबा)

॥श्रीकृष्णाय नमः॥

शुभ-सम्मति

मनुष्य जीवन का समय अत्यन्त दुर्लभ है इसका मूल्यांकन बुद्धिमान लोग करते हैं। शास्त्र में कहा भी है-

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धरमताम्।
व्यसतेत व मुर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥

बुद्धिमानों का समय काव्यशास्त्र के विनोद में जाता है, मूर्खों का समय व्यसन, नींद एवं कलह में जाता है। काव्यशास्त्र का अनुशीलन जैसे काव्यशास्त्र विनोद है, काव्य की रचना भी काव्यशास्त्र विनोद है। काव्य निर्माण के तीन कारणों का प्रतिपादन काव्यप्रकाशकार ने किया है।

१-शक्ति (काव्य निर्माण का जन्मान्तरीय संस्कार)।

२-काव्यशास्त्रादि के अवलोकन से प्रादुर्भूत काव्य रचना की निपुणता।

३- काव्यकौशल सम्पन्न काव्यशास्त्रियों के पास रहकर काव्य रचना का अभ्यास। पं. श्रीतोतारामजी 'शुक' का जन्मान्तरीय-संस्कार विशेष है जिससे वे काव्य रचना कर लेते हैं, शब्दों का चयन भी सुन्दर होता है। जिससे काव्य में चमत्कार का आधान भी हो जाता है। इस काव्य की रचना उन्होंने-''स्वान्तः सुखाय' की थी किन्तु श्रीबिहारीदासजी वृन्दावनी (सम्पादक बाबा) से प्रेरित होकर इसे प्रकाशित कर रहे हैं। इससे अन्य लोग भी लाभान्वित हों। ऐसी शुभकामना है।

दि.

श्यामाशरण
वृन्दावनस्थ

॥ वन्दे श्रीवृन्दाविपिन-विलासिनी ॥

सम्पादकीय

ब्रज संस्कृति ने किसी न किसी रूप में समस्त विश्व को प्रभावित किया है। इसका कारण है अखिल ब्रह्माण्डनायक श्रीकृष्ण एवं उनकी आह्लादिनी शक्ति श्रीराधा के प्रति सभी का समादर तथा समर्पण भाव तथा इन प्रेमी युगल का निजजनों के प्रति अगाध प्रेम। प्रेम का वास्तविक स्वरूप अहीर जाति के इन भोले-भाले ब्रजवासियों में ही उत्कर्ष को प्राप्त हुआ है। बड़े-बड़े आचार्यां, सन्त महानुभावों का आकर्षण/समर्पण ब्रज एवं यहाँ के निवासियों के प्रति सहज रहा है। वास्तव में न तो ब्रज जैसा धाम ही कहीं है और न इस धाम की सी धूम ही अन्यत्र सुलभ है। विश्व कोलाहल यहाँ से कोसों दूर रहात है। मधुररस यहाँ सर्वत्र बिखरा पड़ा है। कल-कल निनादित कालिन्दी का सुभग तट मुखरित है। सखाओं में घिरे ब्रजराज कुंवर की मादक खिलखिलाहट गूंज रही है, यमुना कूलवर्ती कदम्ब कानन के किसी तरु तले खड़े ब्रजराज की मधुरासव सिंचित मुरलिका के मनहर रव को सुनकर विवश परवश भागकर आती गोप किशोरियों के कङ्कण किंकिणियों एवं चरण मंजीरों को अपने आंचल में समेटे यहाँ की प्रकृति सरसाई-सी मुखरित हो रही है।

इसी विषय वस्तु का गान किया शास्त्र पुराणों ने, आचार्यों महानुभावों ने, सन्त-महात्माओं ने। उसी रस सिद्धान्त की आवृत्ति परवर्ती रसिकों द्वारा होती आई है, हो रही है, उनके अपने आस्वादन के आधार पर पं. तोताराम शर्मा 'शुककवि' द्वारा रचित 'शुक-विलास' इसी सन्दर्भ में उनकी रुचि अनुकूल आवृत्ति, उनकी शैली तथा आस्वादन के आधार पर सवैयों तथा छन्दों में अंकित सुन्दर बन पड़ी है।

पंडितजी का लीला शुक ब्रज के सेव्य ठाकुर स्वरूपों, ब्रजभूमि ब्रजवासियों, गोचारण, बसन्त तथा रास-विलास की सरस झाँकियों को उकेरने हेतु रूप-माधुरी, लीला-माधुरी एवं रास-विलास माधुरी के चारों ओर मँडराता रहता है।

अनेक विलासों के माध्यम से पण्डित जी ने अपनी भावना के अनुसार पूर्वाचार्यो, सन्तों की प्रामाणिक वाणी के आधार पर अथवा उन्हीं उच्छिष्ट का आस्वादन कर-अभिव्यक्ति की है। भाषा, शब्दावली तथा प्रस्तुति में उनकी अपनी ही मौलिकता है।

ब्रजभूमि के विषय में एक स्थान पर वे कहते हैं -

ब्रजभूमि मोहिनी है मंत्र है कि जंत्र कोऊ।
टौना है डिठौना जो आये सोई रमि गये॥

....

आय ब्रजधाम श्याम के गुलाम बनि गये॥

कहीं पुष्टि सम्प्रदाय के निधि ठाकुर स्वरूपों का वर्णन है तो कहीं ब्रज की स्थलियों में 'शुककवि' का मन रम जात है। नन्दगाँव में पावन सरोवर से उड़कर सिंहपौर उपरान्त मन्दिर के प्रांगण में लाला की झाँकी कर 'शुक' की दृष्टि बरसाने के महलों की पताकाओं के साथ अनायास ही फहराने लगती है, वहीं कीर्ति कुमारी के रूप में प्रकटी प्रियतम की रस लालसा का सुखद गान करते हैं-

नन्द जू के लाल संग रास रस रंजनी।
रसिकन बखान्यौ प्रगटी साँवरे के अंगिनी॥

श्यामसुन्दर की बालकेलि उपासना हेतु 'शुककवि' उद्घोष करते हैं।

जोपै बालभाव की उपासना की वासना है।
तोपै, गोकुल की रमणरेती करियै उपासना॥

शुक के सहज स्वभाव केला, अमरूद, आम आदि फलों की कामना न कर ब्रजवासियों की सहज मिष्ठान्न प्रियता गुलदाने की बूंदी, हलुआ, रसमलाई सहित अनेक पकवानों के प्रति मिस से तोतारामजी ने रुचि दिखलाई है।

इस सबके साथ-साथ 'शुककवि' लीला-दर्शन लालसावश, रास-विलास, शरद् रैन उजियारी में प्रिया-प्रियतम की अपनी अभिन्न प्राणा प्रियाजी तथा कायव्यूह-स्वरूपा सखियों के साथ लीला-विहार इत्यादि का रसास्वादन बड़ी चतुराई से कर वहाँ के श्वेत श्रृंगार आभरणों में रम जाता है।

बसन्त, फाग-विलास आदि में होली का मधुर चित्रण हुआ है।

ब्रजभाषा में सवैयों की शैली में कवित्त के माध्यम से वर्णन करते समय अनुप्रास का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है; साथ ही भाव के साथ-साथ भाषा का प्रवाह, लय, गति आदि में सहजता सर्वत्र बनी दीखती है।

अत: 'शुककवि' की श्रीकृष्ण चर्चा से ओत-प्रोत अनूठी अभिव्यक्ति 'शुक-विलास' पाठकों को सरस आस्वादन करायेगी ऐसी मेरी धारणा है।

भक्ति विजय एम.ए.

विषय-सूची

विषय	*पृष्ठ सं.*	*छन्द सं.*
१. पुष्टि नवनिधि-स्वरूप-विलास	९	९
२. वृन्दावन के रसिक सेव्य-स्वरूप विलास-कवित्त	११	१
३. वाणी आस्वादन विलास	१२	५
४. श्रीरासबिहारी ठाकुर विलास	१४	१६
५. गोकुल रमणरेती विलास	२२	८
६. श्रीगिरिराज तरैटी विलास	२६	६
७. श्रीनन्द भवन विलास	२९	३२
८. बरसानौ विलास	४५	६
९. अष्टसखा विलास	४८	१३
१०. बलदाऊ विलास	५५	४
११. वृन्दावन शरद् रास विलास	५७	९
१२. अर्न्तध्यान विरह विलास	६१	६
१३. बसन्त फाग विलास	६४	४
१४. श्रीआचार्यस्वरूप कृपा	६६	२
१५. ब्रजमोहिनी	६७	१
१६. लोक मुहावरे विलास	६८	१२
१७. विनय विलास	७४	८
१८. मृदंग विलास	७८	५
१९. दोहा	७८	४

नोट – (१) 'नन्दभवन-विलास' में ठाकुर के सखा परिकर के जो नाम हैं, यह ग्वारिया बाबा के एक लेख कौ पद्यानुवाद है।

(२) 'रासबिहारी-विलास' की प्रेरणा, श्रीबिहारीदासजी वृन्दावनी (सम्पादक बाबा) के एक पद्य सौं मिली, (ब्रज कौ रसिया रासबिहारी)।

पुष्टि नवनिधि-स्वरूप विलास

श्रीनाथजी

श्रीनाथ गिरिवर धरन भव दु:ख हरन तन घनश्याम जू।
कटि लसै दक्षिण कमल कर गिरिवर धर्यो कर वाम जू॥
छबि नयन कमल कटाक्ष मृदु मुसकान मन्मथ लाजहीं।
युग चरन कमल समान करि नव कुंज द्वार विराजहीं॥
ऐसी निकुंज विहार की छबि नित्त जिय में धारिये।
'शुक' चरन कमल सरोज ऊपर प्रान तन मन वारिये॥१॥

श्रीनवनीतलालजी

नवनीतलाल कृपाल आँगन नन्द के क्रीड़त सदा।
घुटुरुन चलत नवनीत लिये गौर वरण करन मुदा॥
ब्रजवाम के मन हरन लीला ललित लालन मन हरै।
'शुक' सिन्धु शोभा निरखि नहीं मन बुद्धि मुख वाणी फुरै॥२॥

श्रीमथुरानाथजी

जय जयति मथुरानाथ रसनिधि सकल ब्रज के भूप जू।
चार भुज आयुध विराजै कमल स्वामिन रूप जू॥
चक्र चन्द्रावली दर्शित शंख यमुना जानिये।
श्याम वरण गदाकुमारी रूप उर में आनिये॥३॥

श्रीविट्ठलनाथजी

रूप अद्‌भुत परम सुन्दर गौर श्यामल अंग है।
कटि धरे दोऊ हाथ देखत लजित होत अनंग है॥
सूरतनया साथ सोहै निरखि छबि रस माधुरी।
'शुक' दरस विट्ठलनाथ के पाये हमन बड़ि भागरी॥४॥

श्रीद्वारकानाथजी

नित संग विहरत प्रिया के कुंजन सदा सुख पावहीं।
द्वै भुजा सौं दृग मीच मोद विनोद सुख दपजावहीं॥
द्वै भुजन भरिकैं अंक भेटत उभय मृदु मुसकान हैं।
'शुक' श्याम वरण किशोर वमु देखिये द्वारकानाथ हैं॥५॥

श्रीगोकुलनाथजी

गौर वरण सुनलित गोकुलनाथ वेणु अधर धरे।
गिरिवर धरे कर सोह सुन्दर वाम शंख लिये खरे॥
वारि वृष्टि निवारि सुरपति आयकें चरनन पर्‌यौ।
'शुक' गोपगन के मध्य राजत नन्द नन्दन मन हर्‌यौ॥६॥

श्रीगोकुलचन्द्रमाजी

दरस गोकुल चन्द्रमाजी कोटि मन्मथ मन हरै।
ह्वै त्रिभंगी वेणु कर में रास नृत्यति गत भरै॥
वाम पद स्थित धरणि पै कनक नूपुर सोहहीं।
भूमि किंचिद् परसि दक्षिण चरन ब्रजजन मोहहीं॥
लटक कटि ग्रीवा ललित छबि अंग अंग रस माधुरी।
'शुक' थकित मन बुद्धि बनत ना एक रसना गावरी॥७॥

श्रीबालकृष्णलालजी

श्रीबालकृष्ण स्वरूप जसुमति अजिर घुटुरुन डोलहीं।
नवनीत लौनी खात मृदु हँसि बैन तोतर बोलहीं॥
आनन कमल दधि लेप कीनै रैनु तन मंडित किये।
नैनन लखी ना माधुरी 'शुक' कोटि बरस कहा जिये॥८॥

श्रीमदनमोहनलालजी

श्रीमदनमोहन लाल झाँकी मुरलिका अधरन धरी।
नाद सुनि आईं निकट निसि में कहा तुम हठ करी॥
श्याम तें क्यों गौर तन ह्वै गये जसुमति लाल जू।
'शुक' भनत बाँके वैनु क्यों अब कहत यों ब्रजवाल जू॥९॥

श्रीवृन्दावन के रसिक सेव्य-स्वरुप विलास

श्रीहित हरिवंशजू के सेव्य राधावल्लभजू
युगलकिशोर ठाकुर हरिराम व्यास के।
रूप के गोविन्द मदनमोहन सनातन के
राधारमन भाये भट्ट गोपाल दास के॥
'शुककवि' गोपीनाथ मधु अपनाय लिये
वृन्दावन वास कियौ भक्ति सुखरास के।
रसिकन सिरताज महाराज वास निधिवन में
बाँकेबिहारी ठाकुर स्वामी हरिदास के॥

वाणी आस्वादन विलास

वाणी हरिदास केलिकुंज की कहानी
श्रीहित की सुवानी नित्य रासरस ओजनी।
प्यारे हरिराम व्यास करनी कथ गानी
लोक वेद विधि डारि भार भक्तिरस सोधनी॥
'शुककवि' जेते ब्रज सन्तन सुवानी जानौं
ब्रजरस सौं सानी लीला रससिन्धु ओधनी।
श्रीव्यास शुक जो बखानी है सुवानी
सोई अष्टछाप वाणी जानौं श्रीवल्लभ की सुबोधिनी॥१॥

श्यामा श्याम केलिकुंज सरस बखानी
रसरीत की सुनीत पीत प्रगट प्रमानी है।
रसिकन के भजन भाव भक्ति की कहानी
श्रीवृन्दावन धाम, लीला, रूप, रस खानी है॥
सहचरी सहेलिन की सेवा सरसानी
'शुक' युगल हुलरायवे की नेह की निशानी है।
वैदुषी प्रपूरी सन्त जीवन की मूरी
श्रीहरिव्यास देवाचार्यजू की वानी महावानी है॥२॥

युगल उपासी ब्रजधाम कौ निवासी
भाषा भनित कौ विलासी गावै उमगि हुलास हौ।
बीस चार छदम छबीली सौं छकावै चित्त
नित नित कौ अष्टयाम बरस लौं प्रकास हौ॥
'शुक' सात सागर कौ नागर नवीलै लख्यौ
श्रीहित हरिवंश रीत रस कौ विलास हौ।
देख्यौ ना सुनायौ ऐसौ रसिकन बतायौ
ब्रजभाषा कौ बाँचा चाचा वृन्दावन दास हौ॥३॥

श्रीतुलसीदासजी

राम कौ भगत जाहि जानतौ जगत सब
राम नाम मंत्र के सुजंत्र बीज बै गयौ।
परमित भाषा मंजु माधुरी चितावै चित्त
युक्तिन सौं युक्त भक्ति ज्ञान बात कह गयौ।
'शुककवि' कलि के कलंकी कुराही कूर
कुटिल कठोरन को राम कथा दै गयौ।
रामचरितमानस जन मानुष में पूरि पूरि
हुलसी कौ तुलसीदास तुलसी सम ह्वै गयौ॥४॥

रचना रसीली में गुन गरबीली में
भक्ति रसशीली राम-कथा ऐसी बाँचिगौ॥
देश देश गाँव गाँव घर घर में डगर डगर
नगर नगर में ढिंढोरा सौ माचिगौ॥
'शुककवि' दोहा चौपाई छन्द सोरठा में
विविध विचित्र खैंचि ऐसी समाचगौ।
तुलसी की रामचरितमानस की रेख देख
पावस रितू में मन मोरा सौ नाँचगौ॥५॥

श्रीरासबिहारी ठाकुर विलास

ऐसौ रासबिहारी छबि छटा याकी न्यारी
नाच कूदकैं रिझाय गावै दैकै गलवैंया है।
मृदु मुसिक्याय सैन नैनन चलाय
वैन मधुरे सुनाय मन मोह लेत दैया है॥
'शुककवि' वृन्दावन ठौर ठौर देख्यौ ठाट
भूले घर घाट जो आये इहि ठैया है।
रसिया है रसीलौ गरबीलौ छबीलौ
मन मोहनौ सलोनौ सुघर रास कौ रचैया है॥१॥

जाकौ वेद वाणी में ब्रह्मा सनकादि आदि
नारद सुरेश ध्यान धरै त्रिपुरारी है।
पालन उत्पत्ति संघार लोक लोकपति
भक्तन के हेतु युग युग प्रगट बपु धारी है॥
'शुककवि' सोई ब्रज मण्डल ब्रजवासीन में
सन्तन बतायौ आवेश अवतारी है।
कहत हैं अलक्ष जाकौं सन्तन प्रतक्ष करि
नैनन दिखायौ सबै ठाकुर रासबिहारी है॥२॥

ठौर ठौर जायकैं बटोर लायौ केते जन
लीला दिखरायकै रिझाय ब्रज पटके।
भौहें कमान पै चढ़ाय नैन बान तानि
डारे करि घायल फिर अनत नाहि सटके॥
ऐसौ बिहारी रास रस कौ खिलारी
केते मोहे नर-नारी देख देख याके लटके।
'शुककवि' पंडित सुजानहूँ अजान भये
मोर के मुकट की लटक माँहि अटके॥३॥

नृत्य गति भाव मृदु बोलन में अरुझौ मन
चितवन लजीली मुसिक्यान भौंह ताने हैं।
गोपिन के जूथ में अनूप रूप दिपै दिव्य
कंचन की बेलि मणि मरकत लुभाने हैं॥

'शुककवि' ब्रज के रसिया के रूपरस में पगे
रह गये चके से थके से थिराने हैं।
केते नर-नारी छोड़ि भागे घर वार
ऐसे रास के रचैया के रूप के दिवाने हैं॥४॥

भरता बिन नारि अरु सरिता यौं वारि बिन
दीप बिन घर, बिना वीर के सनूनौ है।
तरुपी बिन पात के चन्द्र बिन रात सूनी
ताल बिन गीत, रीत बिना सब घिनूनौ है॥

'शुककवि' सन्तन जमात के महन्त सूनौ
ठाकुर बिन मन्दिर भक्ति, भाव बिन अलूनौ है।
जानिये जू जिय में प्रमानिये प्रतक्ष लखि
बिना रासबिहारी के वृन्दावन सूनौ है॥५॥

केतेन को गति दीनी केतेन को मति दीनी
केते धन धाम दै बढ़ायौ है सुजास कौ।
केते आस लाये ब्रजवास दै बसाये
अरु केते भक्ति पाये हैं सुस्वाद ब्रजस कौ॥

'शुककवि' केते संताप के सताये
ताप मत के नसाये करि कृपा की बरसि कौ।
काहे भटकावै क्यौना सरन याकी आवै
ऐसौ दाता दिवैया है रचैया रास रस कौ॥६॥

ब्रजभूमी धाम अभिराम कौ है ललित लाल
भक्तन कौ मोद मन मोहत सलौना है।
ब्रज के बसैयन कौ सग्यौ है सहोदर
सदा संग लग्यौ डोलै माय पीछे बाल छौना है॥

'शुककवि' ऐसौ ठगी ठाकुर है ठसकदार
चितवन की चोट करि मारि देत टौना है।
रास के विलास कौ है सरस सलौना
ऐसौ ठाकुर रासबिहारी ब्रज सन्तन कौ खिलौना है॥७॥

कहा भयौ तीरथ कियेते दियेते दान
सुनिलैरे कान बात मानिलै हठीला है।
जोग जप जाग व्रत संयम कियौ तौ कहा
सुने हैं पुरान एक एकते रसीला है॥

ताप्यौ तन धूनी कहा रागन अलाप कीनौ
बहुतेरे सुकृत तैनै किये हैं नुकीला है।
'शुककवि' कीनौ कहा मानुष तन लीनौ कहा
वृन्दावन जाय नाँय देखी रासलीला है॥८॥

सन्तन सुवानी सुनि श्रवन सुहानी लगै
रूप रस मत्त नैन छटा छबि छीयेपै।
हलन चलन मृदु बोलन मुसिकान मन्द
तिरछी चितौन चारु चुभै जाय हीयेपै॥

'शुककवि' बाँसुरी अधर धरै हैं जब
नाचै संग प्यारी गरवैयाँ कर दियेपै।
और सुख तुच्छ कौन चरचा चलावै
लगै मुक्ति रस फीकौ रासलीला रस पिसेपै॥९॥

देखौ रास जाय भाव भावना सौं चाव करि
पद पद में प्रगट हरिजू कौ नाम पावै है।
रूप माधुरी काक नैन निरखैं बसाय हिये
लीला रसीली आनन्द उमगावै है॥

'शुककवि' सोई ठाम धाम अभिराम कह्यो
जहाँ पै कन्हैया केलि कौतुक रचावै है।
नाम रूप लीला धाम सन्तजन कियौ गान
सोई पहचान रास दरसन लखावै है॥१०॥

ब्रज की सुरीति जन घट घट में प्रगट करी
प्रीतहू बताय दई प्यारी ब्रजवाम की।
माखन के चाखन चपल चोरी दिखाय दई
होरी बताई बरसाने नन्दगाम की॥

'शुककवि' वृन्दावन ठाम कौ सुनाम कहै
भक्ति सिखाय दई श्याम गौर नाम की।
जाय जाय अनतै दरसाय हग लीला रूप
महिमा जनाय दई अपने ब्रजधाम की ॥११॥

नाचै गोपी मण्डल में ऐसौ मन राचै देख
बाँचै नाँय आवै रस रसिया खिलारी कौ।
लैकै फिरकैयाँ दै ठुमका बजावै तारि
सैनन चलायकै रिझाय लेत प्यारी कौ॥

'शुककवि' त्रिभंग ह्वै बजावै मुरली में तान
झन झनकारै पग नूपुर मुरारी कौ।
घुटुरुन सौं लेय घन्ना फेरी छबीलौ
सब नाचन ते रसीलौ मोर नाँच रासबिहारी कौ॥१२॥

लैके ब्रजवासीन की जमात साथ संग चलै
जाय जाय नगर गाँव लीला दरसावै है।
मोर कौ मुकुट कटि पटका काछनी पै कस्यौ
चन्दन की खौर नक वेसर धरावै है॥

हाव भाव गति सौं रूपरस सौं उमगावै हीय
कमल रतनारे नैन चपल चलावै है।
खावै मटक माखन 'शुक' अँगूठा दिखावै
ऐसौ ठाकुर रासबिहारीलाल भक्तन मन भावै है॥१३॥

लोकवत बाललीला ऐसी दिखावै दृग
ऊखल सौं बँध्यौ नैन नीर ढरकावै है।
ग्वालन के संग में छकावै खेल गारी खावै
पीठ पै चढ़ाय घोड़ा बनिकै भज्यो जावै है॥

'शुककवि' भक्तन के मोद उपजावै
अरु ज्ञानी गुमानीन कूं भ्रम सौं भुलावै है।
अनगिन अनेक ऐसी लीला रचावै
ऐसौ ठाकुर रासबिहारीलाल मेरे मन भावै है॥१४॥

जग सौं मन मोर रासरस सौं सराबोर करै
बैठै हिय ठौर फिर और ना समावै है।
ऐसौ अटकावै नाहिं नैंक निकस पावै
कथा कीर्तन सत्संग बूटी घूंट घूंट प्यावै है॥

'शुककवि' वृन्दावन वास दै बसावै
ललित लीला दिखावै अरु मन अरुझावै है।
ऐहो रासबिहारी तेरी बलि बलिहारी जाऊँ
भक्तन के हेतु प्रगट लीला रचावै है॥१५॥

राचै जा ठौर पै बिहारी रासलीला लाल
देख्यौ ता ठाम की प्रसिद्धि सिद्धि बढ़ि गई।
भक्तन के भाव की सुलाभ वास वृन्दावन
युगल उपासना की चित्त चोप चढ़ि गई॥
'शुककवि' लीलारस माधुरी की चरचा में
सन्तन के सुचित्त में सुनित्त केलि भरि गई।
छिटक्यौ ता ठाम ते रस कौ अभिराम सुख
तबसौं ता धाम की भैया श्री सी उतरि गई॥१६॥

गोकुल रमणरेती विलास

गोकुल के ग्वारिया की गोधन के चारिया की
नन्द के दुलारे दुष्ट पूतना प्रहारी की।
गोपी मन रंजन की राधा दृग अंजन की
मैंन मद गंजन की मोर मुकुट धारी की॥
'शुककवि' सखन के सँगैया बल भैया की
दामरी बँधैया भक्त भव भय हारी की।
गिरिवर के धारी मुख मुरली मुरारी की
बोलौ मिल जै जै रमणरेती बिहारी की॥१॥

श्यामा श्याम लीला कौ ठाम ब्रजधाम ऐसौ
सबसौं अभिराम गाम गोकुल में जायलै।
जायलैरे ब्रज की कलित करील कुंज
करिकैं बसैरौ जाय यमुना में न्हायलै॥
'शुककवि' प्यारे रसखान रस छन्दन में
करि अभिनन्दन गुन गोविन्द के गायलै।
कहत हौं पुकार बार बार सुनि मेरे यार
जाय रमणरेती रज अंग में लगायलै॥२॥

चलिकें ब्रजधाम में बसेरौ करैंगे जाय
गोकुल में गोकुलनाथजी के दरस पावैंगे।
ठकुरानी घाट पै सुबोधिनी कौ पाठ सुनैं
रसखानजी सौं रस बातैं बतरावेंगे॥
कहै 'कविशुक' रमणरेती में लोट पोट
कलिमल के खोट पाप तापन नसावैंगे।
रमणबिहारी बाँकी झाँकी लखैंगे नैन
कार्ष्णेय ह्वैकैं कृष्ण कृष्ण मुख गावैंगे॥३॥

घर घर सौं बोल ब्रज ग्वालन कौ टोल करि
खेलन कौ चल्यौ रमणरेती छबीला है।
कदमन की छैयाँ में कन्हैया बहु खेलैं खेल
देखिवे में लौकिक अलौकिक रसीला है॥

'शुककवि' सुहानी सरसावै रितु पावस की
राग रंग ताल दैकैं गावै रँगीला।
बने ग्वाल गोपी सब नाचै बीच नन्दलाल
करै नित गोकुल रमणरेती रासलीला है॥४॥

सन्तन के संग में उमंग वास कीजै यहाँ
छाँड़ि धन धाम ना करिये कछु वासना।
यमुना जल न्हाय सन्त सीथ नित खाय
रज अंग लपटाय मिटै यमपुर की त्रासना॥

'शुककवि' साँची कहै काची ना बात कछू
गुपति करि राखौ कछु करिये प्रकाशना।
जोपै बालभाव की उपासना की वासना है
तौपै, गोकुल की रमणरेती करियै उपासना॥५॥

गिरिवर की दानघाटी गोरस कौ मागै दान
लीला विविध सन्तन नै गाई पद छन्द में।
गहवर की गहन कुंज प्यारी सँग करै केलि
कदमटेर गायन चरावै आनन्द में॥

'शुककवि' कामवन भोजनथारी पै जाय
ग्वालन की झूठि खाय छकि छकि उमंग में।
वृन्दावन रमणरेती रमण करै गोपी संग
गोकुल की रमणरेती खेलै ग्वाल संग में॥६॥

याही रमणरेती में लुक लुक कन्हैया खेलै
लीला बाल केलि अति आनन्द सुहेती है।
याही रमणरेती की धूरि तन धूसरित
पौंछत यसोदा मैया मोद मन लेती है॥

याही रमणरेती की यमुना कछार कुंज
करत विनोद कान्ह सखा संग हेती है।
'शुककवि' वन्दौं बार बार इहि लीला धाम
ग्वालन सँग खेलै नित्त गोकुल रमणरेती है॥७॥

सॉँवरे के रूपरस मत्त उनमत्त भयौ
करत सदाँ ही ब्रजलीला गुन गान है।
जाकी छन्द माधुरी में ललित ललाम लीला
लखत लही है लोग जानत जहान है॥

'शुककवि' सोई रमणरेती यमुना के तट
गोकुल के निकट ताकौ ब्रजवास थान है।
जाति कौ पठान भयौ भक्तन परधान
ऐसी ब्रजरस की खानि कौ खानि रसखान है॥८॥

श्रीगिरिराज तरैटी विलास

सात कोस चौरे में ब्रज में विराज रह्यौ।
जाकी छबीली छबि छटा दिव्य न्यारी है।
ठौर ठौर कुण्ड चहुँओर जल पूरि रहे
सन्त सिद्ध साधक तहाँ देत नित बुहारी है॥

'शुककवि' कन्हैया की केलि कुंज ठाम ठाम
अनुपम अभिराम ताकी जइयै बलिहारी है।
ऐसे गिरिराज महाराज कर तरैटी में
वास बसि कीजै गिरिधारी सौं यारी है॥१॥

याही गिरि ऊपर गोविन्द गोप ग्वाल संग
गोधन चरावै पय पीवत लखायौ है।
याही गिरि ऊपर श्रीवल्लभ कौ भेट्यौ अंक
गाय गाय अष्टसखा साँवरौ रिझायौ है॥

याही गिरि ऊपर श्रीविट्ठल लड़ायौ लाढ़
ऐसौ हरिदासवर्य गिरिवर कहायौ है।
याही गिरि ऊपर में प्रगटे ब्रजनाथ
भक्त कीने सनाथ नाम श्रीनाथ गायौ है॥२॥

येही गिरि कान्ह आप पूज्यौ पुजायौ सबै
येही गिरि मांहि दरस ब्रजजन दिखायौ है।
येही गिरि ऊपर बदरौला की सेव जानि
ऊँचौ पसार कर ताकौ भोग खायौ है॥

येही गिरि धार्‌यौ नख, सुरपति कौ मार्‌यौ मान
येही गिरि गौरव गिरिधारी नाम पायौ है।
'शुककवि' याही सौं गिरिवर की सरन आयौ
हरिदासवर्य गिरिराज मन भायौ है॥३॥

सन्तन कौ संग जीविका है ब्रजवासीन की
सग्यौ है सहोदर सखा मोहन ब्रजराज है।
ब्रजराज रानी इष्ट करिकैं सुजानी
हम गनत ना गरूर ताके सुरन सिरताज है॥

कहैं 'शुक' और कोऊ देव की न सेव जानैं
रहति भरोसे ताके सारैं सग काज है।
कान्हा नैं बतायौ दृग दरसन करायौ
सब देवन कौ देव ब्रजदेव गिरिराज है॥४॥

अबही हौं आई देखि गिरिवर की गैल माई
बैठ्यौ है तरैटी मांहि सीस जाके चोटा है।
मदन गुपाल जू के मोद उपजावै
भावै दूध दही पीय पीय ह्वै रह्यौ सिलोटा है॥

'शुककवि' बखान्यौ ना सिद्ध है प्रबुद्ध कोई
ब्रज में प्रसिद्ध बैठ्यौ काछिकै लँगोटा है।
नन्द जू के ढोटा कौ खास यार जोटा
नाम पूंछरी कौ लौठा ठाड़ौ हाथ लिये सोटा है॥५॥

देख्यौ ना सुन्यौ ना ऐसौ देवता दयालु दुनी
जैसौ गिरिराज देव दारिद हरैया है।
कलि के सन्ताप पाप तापन निवारन को
भवसिन्धु तारन को नाव कौ खिवैया है।

'शुक' ब्रजवासीन के कारज पुरैया
बलभद्र जू के भैया कन्हैया कौ सँगैया है।
खोवा खीर माखन मलाई कौ खवैया
ऐसौ देव गिरिराज काचे दूध कौ न्हवैया है॥६॥

श्रीनन्द भवन विलास

बाँसुरी बजैया कारी कामरी उढ़ैया
ब्रज गायन चरैया नन्दगाम के बसैया की।
रास कौ रचैया कालीनागा कौ नथैया
गिरिराज कौ उठैया गोप ग्वालन सँगैया की॥

'शुककवि' जातुधान कंस कौ हनैया
कान्ह सन्तन कौ प्राण नन्द लाढ़िले कन्हैया की।
यसुदा के छैया की बलभद्र भैया की
बोलौ सब जै जै वृषभानु के जमैया की॥१॥

निसदिन रहै नन्दलाल के सदाँ ही संग
करै सरदारी सदाँ साथ बलदाऊ के।
गरब भरे हैं गोविन्द के गुनन गौर
देवी देव सेवैं ना भरोसे हम काऊ के॥

'शुककवि' जानी कछू अन्तर की प्रीति रीति
सबते हमें प्यारे लगैं बरसाने गाऊँ के।
नन्दगाम वास है हमारौ जू खास
कान्ह दूल्है के भैया हैं सगे काका ताऊ के॥२॥

सुनिकैं कन्हाई की सगाई सब ग्वालबाल
बनिकैं बराती बरसाने कौं सिधारैंगे।
रँगीली गलीन में अलीन सौं ठिठोली करि
गुन गरबीलिन सौं गलवैयाँ गर डारैंगे॥

'शुककवि' साँवरे की सारी सरहेलिन के
रूप के रसिक बनि नैनन निहारैंगे।
बारौठी बनि-ठनि वनवारी संग चलि
तोरन भानुराय जू के द्वारे कौ मारैंगे॥३॥

फूल बँगला में आज बैठे बलराम श्याम
भारी भीर लोग लुगैयन की जुरि गई।
छज्जे तिवारी बारी भाँति भाँति फूलन की
फुदना गुलाब महक मोद ओज भरि गई॥

'शुककवि' कन्हाई की रूप की लुनाई लखि
बरसाने वारेनकैं बात उर धरि गई॥
रोरी कौ तिलक दै झोरी में बतासे डारि
राधा की सगाई आजु कन्हाई को करि दई॥४॥

बरसानौ चन्द है चकोर तहाँ नन्दगाम
जोपै वह कमल तौ ये भ्रमर रंग श्याम है।
जोपै वह स्वाँति तौ ये पपीहा पुकारै पीउ
जोपै वह नाद ये कुरंग के सुनाम है॥

'शुककवि' दोऊ ओर प्रीति परितच्छ जानौं
याही सौं जाहिर जग ब्रज सरनाम है।
दोनौं ही दिन दिन रहत दरस दीदार यार
बरसानौ महबूवा आशिक नन्दगाम है॥५॥

सोहने सलौने गोप ग्वारिया रिझौने सबै
हाँसी में हँस्यौरे सखा प्यारे राम श्याम के।
साँचे हैं सरस रसमीले रसीले बड़े
सजन सगे हैं भानुराय जू के धाम के॥

'शुककवि' रसिक रस रसिया रँगीले रंग
आशिक हैं भानुपुर गोरी गुलाम के॥
रूप अभिराम के चेरे बिन दाम के
बरसाने गाम पे दिवाने नन्दगाम के॥६॥

राधा सी दुलहन आईं जबसौं नन्द भौन माँझ
देखि इन्दु आँनद कौ सिन्धु गाम बढ़ि गयौ।
यसुदा के सुजस कौ वितान तन्यौ तीन लोक
नन्द जू के मोद कौ प्रमोद पूरि चढ़ि गयौ॥

'शुककवि' सखन के सनेह कौ सुराग बढ्यौ
लीला ललित चाव चौप चित्त चलि गयौ।
जबते कन्हैया कारौ जाहिर जगत बीचि
जन जन के मन मन्दिर मूरति सौं मढ़ि गयौ॥७॥

उदित न होते चन्द भानु कुल दीप ब्रज
तौपै अँधियारौ दृग दिसन दरसावतौ।
दरसावतौ सो कैसें ब्रजलीला कौ समाज ठाट
वाणी ग्रन्थ गाथा में कैसें लखि पावतौ॥

पावतौ न ठाम कुंज धाम गाँव देहरहू
'शुककवि' सनेह प्रीत पथ को बतावतौ।
बतावतौ सो कैसें श्यामा श्याम कौ ललाम रूप
जोपै उभय दीप कौ प्रकाश ना लखावतौ॥८॥

दीनी है विहाय राधा साँवरे कन्हैया कूं
आशा है कृपाकरि घर औरहू मढ़ाओगे।
बाढ़ै रस रीत पोत हमकौं प्रतीत भई
औरहू सौभाग्य सुख हमरौ बढ़ाओगे॥

'शुककवि' ग्वालनकैं आव बढ्यौ भाव बढ्यौ
चाव बढ्यौ चित्त में एती हमको बताओगे।
एहो ससुरारिया सलौनी बात साँची कहौं
माँढ्यौ झाँकवेको कहौ का दिन बुलाओगे॥९॥

चरन पधारे नातेदार जू हमारे घर
जोरि कर दोऊ भानुजी सौं नवन कह दीजौं।
चाहत हैं दिन दिन दिनेशवंश कुशलक्षेम
अन्तर हृदय की प्रीत पाती उन दै दीजौं॥

'शुककवि' समधिन सौं सरस ठटोली चारु
विलग ना मानौं रसबुन्द चारु च्वै दीजौं।
दिना द्वै चार में पिछार नाँय कीजै अब
लाला कन्हैया के गौने की कह दीजौं॥१०॥

जोपै कछु कहौं ताकौ बुरौ ना मानैं हम
औगुन गुनन कछू तुमसौं ना छिपाई है।
पाई है हमें जू तुम्हारी खुटाई खरी
पहलै ही विचार क्यौंना कीनी सगाई है॥

गाई है जू अबतौ बात गाँव गुरु लोगन में
'शुककवि' बतायौ जोरी सुन्दर सराही है।
सराही है सबही नैं दैकैं दुहाई कहौं
अबतौ यह कारौ कान्ह भानुकौ जमाई है॥११॥

बैठीं इतैं सारी सरहेल श्यामसुन्दर की
फरिया जरी की पहरे घाघरौ घुमारौ है।
उतै कान्ह जू की सास सोहत मंजु मूरति सी
गोप मध्य ससुर भानु भूपति निहारौ है॥

'शुककवि' वारी वैस बालन के बीच सोहै
ताही के संग ब्याह कान्ह कौ बिचारौ है।
गोरे वरन वारौ पाग चीरा झलकारौ
दीसै सबनते न्यारौ ये कन्हैया कौ सारौ है॥१२॥

सुनौ रे सुनौ रे ग्वाल भानु के भवन बैठ
ग्वारिया गँवारी हाँसी भाषा मत भाखियौं।
तहाँ पै नवेली अलवेली अली जुरैं आय
सैंनन चलावैं तौउ नैना ढुरि राखियौं॥

'शुककवि' साँवरे कन्हाई नैं बताई मोहि
तहाँ की रसरीत प्रीत परतच्छ ताकियौं।
जोपै ससुरारि बात अपनी सुधारि चहौ
तौ सारी पियारीन सौं यारी करि राखियौं॥१३॥

वृन्दावन बाँकेबिहारी के नाम सौं है
नित प्रति निहारैं छबि लोग और लुगैया है।
सोई गोवरधन दानघाटी लै लकुट ठाड़ौ
नाम गिरिधारी गिरिराज कौ उठैया है॥

'शुककवि' सोई नन्दगाम में पिछान लीजै
यसुदा के लागि ठाड़ौ बलभद्र भैया है।
सोई कान्ह प्यारौ वंशीवारौ हमारौ
जाय बैठ्यौ बरसाने में बनिकैं जमैया है॥१४॥

जाकौं कहैं अलख अरूप अविनाशी अज
अनुपम अद्वैत द्वैत अखिल पलैया है।
निर्गुन निरंजन निराकार निर्विकार कहैं
सगुन साकार विभु भुवन भरैया है॥

'शुककवि' सोई सखा साँवरौ सलौनौ
जाकौं ब्रज में पुकारैं नाम लै लै कन्हैया है।
सोई मीत प्यारौ वंशीवारौ हमारौ
जाय बैठ्यौ बरसाने में बनिकैं जमैया है।१५॥

बाजत बधाई सुनि धाईं सब गोप बधू
गडुआ से लडुआ रानी बाँटै झोर अँगना।
वारे गोप बालक बतासेन सौं गोझ भरे
छैला जवारे पोट भरि भरिकैं भगना॥

'शुककवि' ऐसी भीर भौन नन्दजू के द्वार
नाचैं सब गोपी ग्वार भरे अंग मगना।
नन्दजू लुटावैं बागे वस्तर दुसाला
यसुदा मैया लुटावै हार हीरन के कँगना॥१६॥

गोप गुलदाने भये बूँदी ब्रजवाल भईं
भाट भये भंग वंश बाबा कौ सुनायौ है।
हलुआ के हलधर रसमलाई रौहनी है आजु
सखा श्रीखण्ड सिगरे भवन भरायौ है॥

'शुककवि' दासी दारमोठ सी लखाई परैं
नन्द नमकीन चाव चटपटौ चखायौ है।
अमरस सी अँधेरी आधी रात में आनन्द भयौ
रानी रस खीर लाला लडुआ सौ जायौ है॥१७॥

मचलै मति बाबरी बात सुनि मेरी भली
चौका चूल्हेकौ काम झट्ट निवटायलै।
घाघरौ पहिर सिर फरिया उढायलैरी
वाजूबन्द पौंहची हमेल लटकायलै॥

यसुदाकैं लाला भयौ जगसौं निराला
'शुक' देखि आयौ हाला गीत गैल चलि गायलै।
ढाँड़िनियाँ प्यारी भीर नन्द पौर भारी भई
यसुदा ब्रजरानी सौं बधाई नेग जायलै॥१८॥

नन्दी शैल मन्दिर पै बाजत बधाई देखि
मल्लहन लड़ाई देखि वोटा परे जंग पै।
बहुतक नकल देखि आँनद सखन देखि
ढाँड़ी की चढ़न यश भाखन उतंग पै॥

पीरे पट लटक देखि केसर के तिलक देखि
झूलत नन्दलाल देखि पलना सुरंग पै।
भूषन भुजंग देखि सीस जाके गंग देखि
'शुककवि' के ढंग देखि झूमत मृदंग पै॥१९॥

गिरिधर गुपाल जू के सखा संग लागि रहैं
तिनके नाम गाय तोसौं कहौं सुनि साँवरी।
मधुमंगल, पुष्पांग, हंसा, विदूषक है
गन्ध, बन्ध, भारती, कडार, धूर्त नामरी॥

सुवल, वसन्त, उज्वल, कोकिला गन्धर्व आदि
अर्जुन, सनन्दन, विदग्धा प्रिय श्यामरी।
भँगुर, भंगार, साँन्धिक, ग्रहल, चेटकी है
मोद उपजावैं कान्ह निसदिन यामरी॥२०॥

पत्री, मधुकण्ठ, मधुवृत, सालिक, ताण्डविक
रक्तक और पत्रक, माली, मालूर, मालाधर।
ऐते दस दास सखा करत खवासी नित
चापत चरन गोविन्द के कमल कर॥

फुल्लकौंमल, पल्लव, कपिल, मंगला चार
नृत्यति विविध गति हेरत हँसति हरि।
रसाल, रससाली, सुविलास, विशालज्ञ, जम्बू
मोहन को खवावत वीरी इलची लवंग कर धर॥२१॥

वाटिका बगीची वारी लावत सुमन, सुमना
पोय पोय पुष्पहास माला उर धारैं हैं।
कुसुमल्लास, कुसुम विच विच विचित्र रचैं
चन्दन की खौर भाल तिलक सुढारैं हैं।

'शुककवि' आरसी लै सीतल, प्रगुण, स्वच्छ
गोविन्द अरविन्द मुख अलक सँम्हारैं हैं।
आली भाग तिनके कौन कवि रागि कहै
पल छिन ओट नन्द ढोटा संग छारैं हैं॥२२॥

वारिद, पयोद, जल सीतल सुगन्ध देत
सारंग, वकुल, वागे वस्त्र कर धरावैं हैं।
मधुकला, सौरन्ध्री के सन सुखाय सारैं
प्रेमकन्द, अतर सुवास ले सुघावैं हैं॥

दक्ष, कर्पूर, कुसुम, सुबन्ध, सुगन्ध आदि
नाना फुलेल लाय अंग चरचावैं हैं।
'शुककवि' भूषन सजावैं 'मकरन्द'
चन्द मुख से कन्हैया की बलि बलि जावैं हैं॥२३॥

सजि धजि चलत गुपाल वन वीथिन में
कमल, विमल, छत्र पनही पाँय पारैं हैं।
निसा तम दूर करै 'सोभन' कर लिये दीप
आँगन अटारी वाट संग संग सिधारैं हैं॥

'शुककवि' मधुरव, विचित्ररव द्वारपाल
आवत हैं कान्ह मुख कमल निहारैं हैं।
आली भाग्य तिनके कौन कवि रागि कहै
पल-छिन ओट नन्द ढोटा संग छारैं हैं॥२४॥

कुमुद, करण्ड, कुण्ड, कण्डोल, कारण्ड
सेवक सुचारु काल अतिसै मन भाई है।
एकादश धेनु प्राण प्यारी वनवारी की
हंसी, वंशी, गंगा, रंगा, पिंगला, प्रियाई है॥

'शुककवि' पिसंकी, मणि, सारणी, ललाम, धवला
तिनकौं निज कर सौं तृन डारत कन्हाई है।
अनगिन यूथ धेनु कहत न आवै बैन
तिनके गुपाल सँग रहति सदाई है॥२५॥

आजु लखि आई हौं बलाई नन्द भौंन माई
खटपट करत षत् मरकट घुराजैं हैं।
उत्पल, पिसंक, गन्ध, बलीवर्ध वाट अरैं
सुरंग, कुरंग, दंग अंग खौंसि भाजैं हैं॥
'शुककवि' डोलत मुड़ेली महल वारीन पै
लूट घनश्यामजी सौं रोटी रोज खाजैं हैं।
गोविन्द विनाद काज पारे ब्रजराज नन्द
बली बदकार बन्दर मन्दिर विराजैं हैं॥२६॥

डगर डगर दाँगि दाँगि लाँघि लाँघि मन्दिरन
भोर ही सौं साँझ लगि करत नित चहल पहल।
हरिजू हँसत हेर नैकौ न डरात
दधि भात लै खिजात कौर अजिर परत फैल॥
'शुककवि' पौरि के दुआरे दुरि ताकि रही
मोहि लखि श्याम सैंन मरकट बताई गैल।
खौरिकै खसौंटी माल टूटी री बधूटी
आजु नन्दजू के मन्दिद खट बन्दर करत फैल॥२७॥

नन्दभवन खीचरी

प्रपत उठि भौंन सौं री आँगन पखार्‌यौ मुख
काँकन सौं लागे कर कुकुरी श्रतु सीत री।
थर थर देही दन्त कड़ कड़ अधर फर
सीरी समीर तन तीर सी प्रतीत री॥
'शुककवि' तबही टकोर घोर कान परी
जैसें तैसें धाई नन्द मन्दिर के भीतरी।
सीत नैं दबायी सो दवाई नन्द भौंन पाई
कान्ह जू की माई बाँटै बेला भरि खीचरी॥२८॥

दावि दावि काँकन में भाजन भजत ग्वाल
धामन सौं धाये पग पारे नाहिं लीतरी।
सोत बादशाह कौरी पौरुष पजारयौ पेख
यही व्रत धार्‌यौ मनमोहन के मीतरी॥
भोर ही सौं पौरि रौर भयौ छोरन कौ
गलिन गिरारे द्वारे गावैं यही गीतरी।
या सीत के भजाई की दवाई नन्द भौंन पाई
कान्ह जू की माई बाँटै बेना भरि खीचरी॥२९॥

तापत तरल तन व्यापत अतनु तोय
दोऊन कौ जतन तासौं कहौं चित चीतरी।
बसत अजान ह्वै जहाँनन जनावै तीय
ब्रजपुर वीथिन में डोलत ज्यौं तीतरी॥

'शुककवि' कुपथ ना कीजै मकन साँच लीजै
खर्च ना छदाम पत्थ कहौं भेद भीतरी।
कान्ह की निकाई लखि काम की खुटाई जाय
सीत जाय जोपै नन्द भौंन खाय खीचरी॥३०॥

छाँड़ि सब आस नन्दगाम कौ सुवास करि
पावन सरोवर में जायकैं नहाले तू।
नन्द पौरि नन्दीश्वर देवता की सेव करि
राम श्याम जोरी को उर में बसाले तू ॥

'शुककवि' गोप ग्वार मण्डली में बैठ नित
कवित सवैया में रसना रसाले तू ॥
आँनद मगन ह्वै लगन लगाय बैठि
यसुदा के छैया बलभैया गुन गाले तू ॥३१॥

लोक परलोक धाम धवल की न आस हमें
एक अभिलाष है प्रवास नन्दगाम कौ।
हाँसी हुरदंग खेल ग्वालन को केलि भावै
धनिक सुजान गुनी हमरे न काम कौ॥

'शुककवि' कपोत केकी कीर काग कोकिलाहू
कीजै करतार हमें नन्दजू के धाम कौ।
देवी देवता के काहू नाम सौं न काम कछू
हमकौं तौ नाम आछौ प्यारे राम श्याम कौ॥३२॥

बरसानौ विलास

भानु के भवन भीर भारी ब्रजवासीन की
कीरत की कूख राधा प्रगटी श्याम संगिनी।
संगिनी सहेली ललिता, चन्द्रा, विशाखा वाम
गहवर की कुंज केलि खेल रस रंगिनी॥

'शुककवि' सुमन सौं अति सुकुमारी
श्रीभानु की दुलारी ब्रज भक्त सुख कंदिनी।
नन्दजू के लाल संग रास रस रंजनी
रसिकन बखान्यौ प्रगटी साँवरे के अंगिनी॥१॥

उमग्यौ ब्रज सिन्धु देखि बरसाने इन्दु आजु
भानु भौंन भीर माँची गोपी गोप गान की।
नन्दजू की रानी उमगानी हिय जानी साँच
जोरी बनाई विधि साँवरे सुजान की॥

'शुककवि' गावैं सुनावैं सबै बोलि बोलि
सुनौं कान खोल रेख खैंची पाषान की।
करै जो अराधा ताकी साधा मन पूरी करै
बाधा मिटावैगी श्रीराधा वृषभानु की ॥२॥

मच्छप से कच्छप से वामन छलैया बलि के
वाराह बलैया बल के ऐसे नैन बाँके हैं।
राम से लड़ैया रन के नरसिंह विक्राल पन से
मोहित हैं मोहिनी से मन्मथ मद छाके हैं॥

'शुककवि' कहैं परसुराम से प्रतापी तेज
सनक सनकादिक से छोटे छबि छाके हैं।
चित्त चोर वारे कृष्ण से चतुर भारे
दसौं अवतार वरने नैन राधिका के हैं॥३॥

दोऊ कुल रीति की प्रीति परितच्छ करी
कलि में प्रतक्ष द्वापरयुग की कहानी है।
ठौर ठौर लीला ठाम नाम सौं प्रकाश किये
नन्दगाँव बरसानौ जाहिर जग जानी है॥

'शुककवि' समाज ठाट दोऊ ठौर ठेल धर्‍यौ
श्याम गौर केलि गान प्रगट बखानी है।
नारद के रूप श्रीनारायण भट्ट आय
प्रगट करी राधा मंजु मूरति सुहानी है॥४॥

ब बानिक विलोकि बरसाने वृषभानु भौंन
बैठी जहाँ बिहारी संग विविध विलासनी।
र रूप रंग राका सी भोरी किशोरी छबि
रति सौं करोरी राग रंग रस रासनी॥

सा 'शुककवि' साँवरे सलौने की सुन्दर जोरी
सीस सीमन्त साजै सरस सुहासनी।
नौ नागर के नेह नव नागरी नवल बाल
नवल निकुंजन में नित नित निवासनी॥५॥

भादौं कृष्ण आठैं सौं आँनद उमंग ब्रज
प्रगट दरसावै लीला गाँव गाँव झाँकरी।
आज यहाँ काल वहाँ परसौं तरसौं में देखि
विहावलौ रचायौ ऊँचे गाँव ओर ताकरी॥

प्रेमसर डौंगा करहल महाराज राचै रंग
'शुककवि' बतायौ मोय नाम मुख भाखरी।
श्रीनारायण भट्ट आचारज सुभट्ट
जिन लीला प्रगट्ट करी वट्ट खोरि साँकरी॥६॥

अष्टसखा विलास

चित्त के चितायवेको सरस समझायवेको
गूढ़ दरसायवेको वैदुष प्रपूर है।
रस सरसायवेको भक्ति बरसायवेको
साधन बतायवेको सिद्ध भरपूर है॥

'शुककवि' कन्हाई के बालकेलि गायवेको
प्रगट्यौ कलि मांहि कवि कोविद मसहूर है।
ऐसौ ब्रजधाम कौ गरूर गुण पूर
ब्रजभाषा कौ भूर भयौ सूर सौ ना सूर है॥१॥

अष्टछाप मण्डली को नायक सु गायक हौ
गोविन्द की लीला ललित लोगन सुनावतौ।
अर्थ अनूप अलंकार अनुप्रासन सौं
वैदुष के गुनन सौं गरूर दरसावतौ॥

'शुककवि' कौतुकी कन्हैया करतूति
खोलि खोलिकैं दुछोल ग्वाल मण्डली में गावतौ।
श्रीविट्ठल मन भावतौ यौं कहिकैं सुनावतौ
पुष्टिमारग कौ जहाज सूरदास कौं बतावतौ॥२॥

विरह अलाप के प्रलापन के जापन सौं
जन जन के जीवन में विरहा बगारिगौ।
भानु की दुलारी नन्दलाल केलि कुंजन के
गान करि कलित कछारन बुहारिगौ॥

'शुककवि' भाषा भनित सागर कौ नागर हौ
कलि के प्रबुद्धन के मान मद मारिगौ।
जोपै आँख हौ।ती तौपै करतौ करतार कहा
बिना आँख वारौ ऐसौ गजब गुजारिगौ॥३॥

सूर कविता की सविता सी ज्योति जाग देखि
देव लोक लोकपति सोच उर भरि गये।
हाय हाय माची यमराज की वस्याय कछु
पापीन के पातक पहार से पजरि गये॥

'शुककवि' पंडित सुजानहूँ बुझान लागे
चकित चकौंधे से विचार में विचरि गये।
सूर पद रचना की प्रभुता परेखे में
पेखि पेखि पात से पुरान पीरे परि गये॥४॥

यमुनावतौ गाँव ब्रजधाम कौ निवासी कुंभना
सखा श्रीनाथ जू कौ अति मन भावतौ।
आठौ याम साँवरे की लीला गान ध्यान करै
खेतन करील तर वासर बितावतौ॥

'शुककवि' सुत बनितादि ते न नातौ नेह
युगल उपासना में चित्त चाव लावतौ।
करतौ रस रंग लाल गोवरधननाथ संग
टौंड़ के घने में गाय युगल रिझावतौ॥५॥

करतौ रस बतियाँ गिरिधरलाल को लगाय छतियाँ
रतियाँ भर ऊँची ध्वजा शिखर निहारतौ।
जग सौं अनासक्त धन धाम सौं विरक्त
भक्ति भाव में आसक्त ह्वै कै जीवन गुजारतौ॥

'शुककवि' सीकरी अकबर दरबार बीच
तीखी सुनाय फेर द्वार ना निहारतौ।
गिरिधर वियोग में संयोग कौ सुयोग जानि
गाय गाय रचना कौं नैन नीर ढारतौ॥६॥

विविध प्रकार राग रागिनी अलाप करि
विरह विनोद भाव भक्ति दरसावै हौ।
बाल कैशोर पौगण्ड लीला ललित गावै
सुधर सुजान सबही के मन भावै हौ॥

'शुककवि' कन्हैया की चोरी चपल जोरी कौं
खरी खरी खोलि खूब खासी सुनावै हौ।
श्रीवल्लभ कौ दास ऐसौ परमानन्ददास सखा
अष्टछाप वाणी कौ सागर कहावै हौ॥७॥

गोवरधननाथ सेवा रीति में खर्‌यौ हौ खूब
निपट निसंक भीत नैक ना विचारी हौ।
ऐसी टेक बाँकी ताकी विट्ठल श्रीनाथ राखी
गावै रासलीला पद नाचै गिरिधारी हौ।

'शुककवि' सिखाय गान गनिका उधारि दीनी
श्रीवल्लभ कृपालु कौ अनन्य व्रतधारी हौ।
कृष्ण भण्डार कौ सुचारु सौं सम्हारि करै
अष्टछाप मध्य कृष्णदास अधिकारी हौ॥८॥

लाड़िलौ लड़ैतौ सखा गिरिधर गुपाल जू कौ
ताके विन खेल ख्याल नैकहू सुहावै ना।
दोउ ओर ऐसी प्रीत पेखी ना सुलेखी कहूँ
गायन गुपाल संग ताके विन जावै ना॥

'शुककवि' परमदयाल श्रीगुसाईंजी कौ
सेवक सलौनौ ऐसौ देखिवे में आवै ना।
गान में गुनीलौ भक्ति भाव में रसीलौ
ऐसौ गोविंद सखा सौ सखा दूसरौ लखावै ना॥९॥

अक्षर अलंकार अनुप्रासन को सँजोय देतौ
सुवरन में जैसे मणि माणिक कौ मढ़िया है।
हेरि हैरान ऐसौ वैदुष की खानि
प्रौढ़ पंडित महान् काव्य कृति कौ सुघड़िया है॥

'शुककवि' भाषा कौ गौरव गुमान गुनो
कहिहौं प्रमान दै बजायकैं नगड़िया है।
काहू सुजान नैं सुनायी बात दीनी मोय
और कवी गढ़िया तौ नन्ददास जड़िया है॥१०॥

दरसन दै जाकौं निज सरन में बसाय लीयौ
मैटी बुद्धि खोटी भक्ति दैकैं निज चरन की।
लीला कथि गावै भक्ति हियै उमगावै
रूप हरि कौ बसावै आस मैटी वृत्त भरन की॥

'शुककवि' मथुरा द्विज वंश में प्रशंस भयौ
जाकी अष्टछाप मधि वाणी भव तरण की।
जानिये कलपना ना जपना जीह जीवन में
रचना छीतस्वामी श्रीविट्ठल गिरिधरन की॥११॥

यमुनावतौ वारौ श्रीगिरिधर कौ सखा प्यारौ
कुंभन कौ दुलारौ लीला रस में छकावै है।
खेतन करील तर बैठि उमगावै
दीप लखिकैं झरोखन भाव प्रगट जनावै है॥
'शुककवि' विरह वेदना में गाय गाय भाखै
गोवरधनवासी तुम विन रह्यौ नाहिं जावै है।
श्रीविट्ठलनाथ जू के अति मन भावै
ऐसौ चत्रभुजदास अष्टछाप मधि गावै है॥१२॥

देख्यौ ना सुन्यौ ना कहूँ लेख में न लेख्यौ ऐसौ
अनुपम अगाध बुद्धि ज्ञाता ज्ञान भूर है।
भूरि भक्ति भावना औरु साधना के सिद्ध सन्त
रचना प्रसिद्ध लोक लोक मशहूर है॥
'शुककवि' बालमीकि उद्धव के प्रबुद्ध रूप
राम कृष्ण लीला गान गाथा भरपूर है।
भारत के गरूर भाषा भनित के हुजूर
एक राम भक्त तुलसी दूजौ श्याम भक्त सूर है॥१३॥

बलदाऊ विलास

ब्रज चौरासी सरताज बलदेव राज
गाज रही कीरति लोक लोकपति सुराज कें।
गाम गाम ठौर ठकुरायस ठसक जाकी
धारे हल मूसर अंग भूषन सुसाज के॥
'शुककवि' लाड़िले कन्हैया के भैया बड़े
रोहिणी के छैया हैं लड़ैते ब्रजराज के।
महिमा अगाध योगी साधैं समाधि
नित बन्दौं पद कमल दाऊदयाल महाराज के॥१॥

ठाकुल अलवेलौ ऐसौ देख्यौ न सुन्यौ न कहूँ
लैकें ग्वाल संग भंग पीवै भरि बेला है।
मोरमुकुट कुण्डल कटि काछिनी तिलक भाल
मदन गुपाल गोप बालन सहेला हे॥
'शुककवि' अनन्त कौ न पावै कोऊ अन्त आदि
जाकी माया कौ जग दीख रह्यौ खेला है।
भादौं छठी भारी सब देखैं नर नारी
देव दाऊ महाराज जनम दाऊजी मेला है॥२॥

रोहिणी सुवन के दुख दारिद दवन के
महा मंगल करन के सुपास वास लहिये।
रेवतीरमण के धेंनुक केशी हनन के
वसुदेव के ललन के चित्त चरन चारु गहिये॥

'शुककवि' गौर अंग माधुरी वरन के
हल मूसर धरन के पराग पग चहिये।
रैन दिन घरी पल छिनक हू आठौ याम
राम बलराम बलभद्र बलि कहिये॥३॥

(ब) बड़ौ है बली है बलधाम बलिराम नाम
वपुषु विशाल बनवारी बड़ौ भैया है।
(ल) लाल लाल लोचन ललौहे लप ललित झूमि
ललकनि ललाम लखी लोगन लुगैया है॥

(रा) 'शुककवि' रंग राग रागिनी गवैया राम
रसिक रसीलौ रास रस कौ रचैया है।
(म) मद मदमातौ मन्मथहू कौ मोरै मद
मंजु मूरति सौ माँढ्यौ मोरमुकुट कौ धरैया है॥४॥

वृन्दावन शरद रास विलास

शरद् रितु यामिनी में पून्यौ कौ विमल चन्द
लखि ब्रजचन्दजू कैं उमग्यौ हुलास है।
वंशीवट वृन्दावन यमुना के निकट
नट नागर सिर मुकुट धरे कियौ अभिलाष है॥

'शुककवि' ठाम की ललाम छबि श्याम लखि
चन्द चाँदनी कौ फैल्यौ चहुँदिसि प्रकास है।
काम के प्रसून पंच बाणन पजारिवे कूं
रसिक रसराज कियौ मण्डल महारास है॥१॥

वृन्दावन वंशीवट बाँसुरी बजाई कान्ह
घर घर सौं आई सिमिट गोपन की बाला है।
शरद् जुन्हाई में रचाई रासलीला श्याम
बाजत मृदंग बीन बाँसुरी रसाला है॥

'शुककवि' तत्त् भैया तत्त् नाचत बलैंया लै
सुरगन विमान चढ़ि देखत निहाला है।
ऐसौ राम आला करै मदन गुपाला आजु
दो दो संग बाला बीच नाचै नन्दलाला है॥२॥

आजु वृन्दावन मन भावन सुहावन है।
रचैगौ कन्हैया रास विथ-किथ निहारी मैं।
बाँसुरी बजायकैं बुलावै गोप बालनि कौं
देखि चन्द चाँदनी को सुरति सम्हारी मैं।

'शुककवि' काछनी किंकिणी कलित हेर
मोर के मुकुट पै बार बार बलिहारी मैं।
वंशीवट कालिन्दी तट पै लै लकुट हाथ
ब्रज कौ बिहारी बैठ्यौ शरद् उजारी मैं॥३॥

कालिन्दी कूल पै कछार कुंज केवड़ा पै
कमल पै कली पै अली पै अलिवृन्द पै।
दर में दिसान में दिवार पै दुलीचन पै
छित पै छतान पै छबीली छबि दन्द पै॥

'शुककवि' वाटिका बगीची बेलि वारीन पै
पनघट पनहारिन पै कामिनी के कन्त पै।
शरद् जुन्हाई आजु सरस सुहाई माई
बाँसुरी पै वन पै विलोकि ब्रजचन्द पै॥४॥

शरद् उजारी परव पून्यौ चन्द चाँदनी कौ
ठाम ठाम ब्रज में प्रकाश कौ हुलास है।
रास रस केलि लीला गावैं समाज साज
बाजत मृदंग झाँझ झनक मिठास है॥

'शुककवि' धाम धाम खीर मन मोद करि
बूरौ दै पूरौ भोग राख्यौ हरि पास है।
घर घर चबाव नर नारिन कौ भाव
आज कुंवर कन्हैया नै रचायौ महारास है॥५॥

नव रस राज श्रृंगार सौं सरस रस
रास रस क्रीड़ा सु रसिकनि मन भाई है।
व्यास शुक वरनि भागवत में प्रकाश कीनी
नन्ददास सोई भाषा मांहि कथि गाई है॥

'शुककवि' गोवरधन निकट परासौली ठाम
बल्लभ कृपालु इहिं ठौर ठहराई है।
शरद् यामिनी में ब्रज भामिनी के संग आजु
यसुदा के नन्द रासलीला रचाई है॥६॥

एक ध्रुवताल में धरनि ततकार करै
एक जतताल में प्रमूलन सुनावै है।
एक मूलताल में विलोम लोम लास्य करै
एक झपताल बाल रूप-झूम जावै है॥

'शुककवि' एक चौताल में चरित्र करै
विविध विभाव भाव नैनन चलावै है।
एक लिये वीणा अंग एकन मृदंग
एक झाँझ झनकारै कान्ह बाँसुरी बजावै है॥७॥

दैकै गलवैंयाँ एक कान्हरे में गावै
एक मालव अलापै माल मंजु पहिरावै है।
गावै केदार कर्न कुण्डल निहारै एक
एक नट गाय नृत्य भाव दरसावै है॥

'शुककवि' विहाग गाय विविध गत जनावै एक
एक मालकौंस गाय कुसुम बरसावै है।
एक करै थेइया एक लेत है बलैंया
एक पकरि करैया लै कन्हैया को नचावै है॥८॥

श्वेत सरि सरिता ब्रज बनिता सब भाईं श्वेत
यमुना पुलिन श्वेत सुभग सुहाई है।
श्वेत नभ धरनी श्वेत वंशीवट विटप श्वेत
श्वेत नग हीर चीर श्वेत जरिताई है॥

'शुककवि' श्वेत कान कुण्डल सिर मुकुट श्वेत
काछिनी किरण श्वेत सोभा सरसाई है।
श्वेत कटि पटुका कर बाँसुरी लकुट श्वेत
साँवरे के अंग श्वेत शरद् जुन्हाई है॥९॥

अन्तर्धान विरह विलास

॥ सवैया॥

आकुल व्याकुल ह्वै जु गईं
ब्रजवाल विहाल बिहारी बिना।
दृग सौं बहैं नीर अधीर भईं
तरफैं हैं मीन ज्यौं वारि बिना।

पूछैं जड़ चेतन बेलिन सौं
विरहाग बरी बनवारी बिना।
देऔ बताय कृपा करिकैं
हम हैं दुखिया दुखहारी बिना॥१॥

हे मालती माल हिये पै धरैं
मनमोहन लाल कहाँ पै गये।
हे केतुकी कान्ह को दीजै बताय
हमसौं किहि कारन रूठि गये॥

मन्दार उदार पुकार सुनौ
वह नन्दकुमार कहाँ छिपये।
'शुक' जोरि करैं बन्दन चन्दन
नदनन्दन चन्द हमारे गये॥२॥

अवनी नवनीत कौ चोर लख्यौ
वह मोर के पंख को धारी कहाँ।
तुलसी हुलसी हम जानि परी
तूअ माल कौ धारी मुरारी कहाँ॥

अहो अम्ब अशोक जू शोक हरौ
ब्रज छैल छबीलौ बिहारी कहाँ।
वट तुंग सुरंग कदम्ब कहौ
वह ग्वालनकौ गिरिधारी कहाँ॥३॥

आगे चलि देखि ठगी सी रहीं
ये पद पंकज मोहन प्यारे के हैं।
जब अंकुश चित्रित देखि सखी
ये सुन्दर श्याम हमारे के हैं॥

सनकादिक नारद ध्यान धरैं
सँग नागरी नन्द दुलारे के हैं।
वन्दन अभिनन्दन कीजै सखी
विरही ब्रजवाल सहारे के हैं॥४॥

ये फूल परे बिखरे अवनी
सजनी लखि जावक फैलि पर्‌यौ
कुमकुम कजरा गजरा गर कौ
किहिं कामिनी कौतुक केलि कर्‌यौ॥

'शुक' सो बड़िभागि सुहाग भरी
जिहिं प्रीतम संग में रंग रर्‌यौ।
आली नहीं जानि परी किहिं क्यौं
किहिं कारन दरपन देखि धर्‌यौ॥५॥

निज भामिनि की बन यामिनी में
कर सौं निज बैंनी गुही है लला।
पग जावक काजर दै अँखियाँ
कखियाँ लै केश सम्हारे भला॥

दरपन प्यारी निज हाथ लियौ
प्रतिबिम्ब निहारत नन्द लला।
आयौ ब्रजबालिन छेक छली
हमहूँ जनि छेक न जाय चला॥६॥

बसन्त फाग विलास

वृन्दावन कुंजनि धुनि गावत बसन्ती
साज बाजत बसन्ती ढप धमक बसन्ती है।
हाव-भाव नृत्य गति गमन बसन्ती
केकी कोकिला कपोत कीर कलरव बसन्ती है॥

'शुककवि' श्याम गौर गुनन बसन्ती
शुभ्र सुमन बसन्ती रासरमण बसन्ती है।
प्यारी चन्द्रका पै चारु चटक बसन्ती
लखि मोर के मुकुट की आजु लटक बसन्ती है॥१॥

वरसन सौं आस अभिलाष लगी हियरा में
प्रगट बखानि कहौं तोसौं निज मन्तरी।
'शुककवि' कानि कुल लोक की कहाँलौं करौं
हौंतौ बिकानी साँवरे के प्रेम पंथरी।

ननद जिठानी सासु पिया की न त्रास गनौ
अंक लै निसंक कान्ह भेटौं एकन्तरी।
यसुदा के छैया की दैकै गलवैयाँ आजु
खेलूं खिलाऊँ मन भावन बसन्तरी॥२॥

गावैं फाग रंग लै लै चंगन उमंग ग्वार
भरि भरि गुलाल झोरी होरी हुरियारे की।
नैकहू न सकुच करैं वारे जवारे कीन
कानि मानि काहू की न सुधि-बुधि सम्हारे की॥

'शुककवि' रिझावैं झाँझ झालरी बजावैं
अरु नारीन नचावैं घोर घुरत नगारे की।
देखौ ब्रज गाँव गाँव चौहटे चबूतरा पै
होरी हुरदंग ब्रज नन्द के दुलारे की॥३॥

देखौ फैल फागुन के गैलन में चहैल पहैल
मन्द मन्द मारुत की रमक ररकि गई।
नारियाँ नवेली छैल गैलन में देखि देखि
खुलि गयौ घूंघट सीस फरिया सरकि गई॥

'शुककवि' अवीर गुलालन की बूकन सौं
बेल वन बागन सुगन्धन भरकि गई।
वरसि गई रंग की फुहारैं पिचकारीन सौं
होरिन की गारीन सौं गोरियाँ फरकि गई॥४॥

श्रीआचार्यस्वरूप कृपा

तुलसी कबीर सूर मीरा के गीत प्रीत
जोपै न होते भक्ति सागर न बाढ़तौ।
युगल किशोर रूप हिय में न आँतौ छिन
ग्यान वैराग्य भक्ति कैसेंकै प्रगाढ़तौ॥

प्रगट न होते आचार्य हरि रूप
'शुककवि' पाप के पयोनिधि ते कैसें कौन काढ़तौ।
कलियुग कलंकी करतूतन कुकरमन सौ।
जन जन कलेवर को कारौ करि माढ़तौ॥१॥

भक्ति पथ रीत कौ सुन्दर सलौनौ स्वाद
शास्त्र श्रुति मथिकैं नवनीत सौ चखायौ है।
सेवा गान सुमिरन हरि कीर्तन की सरस रीत
तिलक गर कंठी पाठ प्रेम कौ पढ़ायौ है॥

प्रगटे आचारज कलि पावन पुनीत कियौ
नाम रूप लीला धाम हरि कौ लखायौ है।
'शुककवि' कीने कृतारथ जथारथ
कलि के ऊधमी अभागेन को सभागे बनायौ है॥२॥

ब्रजमोहिनी

ब्रजभूमि मोहिनी है मंत्र है कि जंत्र कोऊ
टौना है डिठौना जो आये सोई रमि गये।
खाय रूखी सूखी मधुकरी में मोद भये
नाम रूप लीला धाम गाय गाय गुन गये॥

'शुककवि' रसके चसके में ह्वै गये ऐसे
झाँकि हू न देख्यौ उत ब्रज रज में सन गये।
घर छाँड्यौ गाम छाँड्यौ पिता पुत्र वाम छाँड़ि
आय ब्रजधाम श्याम के गुलाम बनि गये॥

लोक मुहावरे विलास

करिये न कबहू हरि विमुखन कौ संग जाय
जियमें विचारि बात मानिलै हमारी है।
तिनके संलाप सौं विवेक बुद्धि नासै छिन
आवै घिन नाहिं तोहि जीवन क ख्वारी है॥
'शुककवि' काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर
तिनसौं न उबरै रे तेरी मति मारी है।
चतुर चितावैं बतावैं, ना आवै कबहू
राजा के अगारी और घोड़ा के पिछारी है॥१॥

तजिकै सुसंग रे कुसंग क्यौं कमावै
तेरे लागि रहे संग जे कहावत सुमीत हैं।
करिलै सुकृत कछु भजिलै हरी कौ नाम
पढ़िलै रे पोथी पुरान जो पुनीत हैं॥
'शुककवि' बोवत बमूर ना खजूर पावै
विधि कौ विधान बुधि गावैं यही रीत हैं।
कोसे करि काहे करतार कौं क्यौं बार बार
जैसी तेरी कौमरी तैसे मेरे गीत हैं॥२॥

पोथी पुरानन की रेखनि में पेखि पेखि
देखि डारे सारे न पायौ ओर छोरा है।
जोग जपि जाग रह्यौ तीर्थन में भागि भागि
दान में न दीस्यौ दीयौ भरि भरिकैं झोरा है॥
'शुककवि' अवलौं तैं तीन्यौं पन खोय दिये
झाँकिहू न देख्यौ उर अन्तर की ओरा है।
बैठ्यौ घट मांहि रे पसारि नैन देख्यौ नाहिं
बगल में छोरा तेरे जगत में ढिंढोरा है॥३॥

धूनी लगाये भस्म अंग लपटाये
भेष नाना बनाये नाम धार्‌यौ अघोरा है।
भाँति भाँति कीने हैं जतन जो बताये गुनी
सुनी है कथा अनेक कागज ज्यौं कोरा है॥
'शुककवि' पायौ ना परम पिताकौ पतौ
चारौं दिसि भाजि भाजि फिरै जैसे घोरा है।
बैठ्यौ घट मांहि रे पसारि नैन देख्यौ नाहिं
बगल में छोरा तेरे जगत में ढिंढोरा है॥४॥

स्वारथ में पाग्यौ परमारथ न सूझौ तोहि
बूझ्यौ बहु वेर क्यौं रे ठगिया ठगात है।
कहा भयौ तिलक लगाये गर कण्ठी बाँधि
आँधी ना सूधी तेरी समझि में न आत है॥

पाछी लत जोई तेरी अजहूँ न खोई
खरी बात है पुरानी जो कहति चली आत है।
भाखत सुजान 'शुक' सुनी जैसी कान
चोर चोरी ते जात हेरा फेरी ते ना जात है॥५॥

और कीना ओर लखै अपनेन कूं धावै दौरि
रौरि करि पौरि पर जावै करि कौरि लेय।
दोऊ भुज जोरिकैं निहोरि करै बार बार
पलँग बिछावै थार विंजन के परसि देय॥

'शुककवि' सन्तन कूं दूरि बैठावै घूंट
नीरहू न प्यावै ऐसौ धूत पन धार्‌यौ धेय।
ऐसी जग रीति लई कहावत सो साँच भई
आँधरौ बाँटै सिन्नी फिर फिर घरकेन कूं देय॥६॥

तिलक लगावैं तौ तीखी कटाक्ष करैं
सन्तन में बैठें तौ कोसैं ता ठौर कूं।
मन्दिर दिवाले दीन दुखिया कौ दरद देखैं
व्यंग करि बखानत हैं साँझ और भौर कूं॥

'शुककवि' कासौं कहैं कौन निरधार करै
कीजै करतार न्याव विनती की जौर कूं।
नैनन में हमतौ अँजायौ ऐसौ जानिकैं जू
काजर लगायौ त्यौर कूं तौ दुनियाँ जानं और कूं॥७॥

सवैया

गाँव के देव न सेव करै
अरु कोसन दूरि के देव को भागै।
आपनी राह न रीत चलै
नर औरु की रीत के गीतन रागै॥

क्यौं करि मारी गई मति रे
बहु बेरि कही परि एक ना हाँगै।
साँच कहैं बड़ि रे भलि यौं
अरे दूरि के ढोल सुहावने लागै॥८॥

राम कौ नाम लीयौ भलि यौं
पर भीतर सौं भलि दरसै ना।
दीन ह्वै हीन की बात करै
पर दीन दया तन परसै ना॥

'शुक' प्रीत की रीत बखानि करै
पर प्रीत हिये विच सरसै ना।
जानिये या जग में नर यौं
बदरा गरजैं सो बरसै ना॥९॥

हरिनाम बड़ौ सब साधन ते
हरिनाम बिना वेगारि सी है।
कलि खोट कुचाल कटावन को
हरिनाम करौत की धार सी है॥

हरिनाम सौं पाहन सिन्धु तरे
तोहि लागत बात गँवार सी है।
'शुक' देखि पुराननि नाम प्रताप रे
कंकन को कहा आरसी है॥१०॥

हरिनाम भज्यौ सब काम सज्यौ
हरिनाम तज्यौ जग हार सी है।
हरिनाम पढ्यौ तौ पढ्यौ सबही
हरिनाम तज्यौ मुख गारि सी है॥

हरिनाम की कीरत है कलि में
हरिनाम बिना जग रारि सी है।
'शुक' देखि पुराननि नाम प्रताप रे
कंकन को कहा आरसी है॥ ।१ ॥

साधन जानैं न सिद्ध बनैं
अरु बात करै बहु डोलत ऐंड़ौ।
राम कौ नाम भजै नाहिं बावरे
काहे पर्‌यौ जगजाल बखेड़ौ॥

गाय न जानैं बजाय न जानत
तानन तोरत गान अधेड़ौ।
एक मुहावर हौं सुनियौ
'शुक' नाँच न जानत आँगन टेड़ौ॥१२॥

विनय विलास

सूर छीतस्वामी नन्ददास कृष्णदासजू के
इनहीं की रचना रस रसना रँगी रहै।
श्रीवल्लभ चरन की सरनि में द्यौस निस
अष्टाक्षर मंत्र सेवा भावना जगी रहै॥
मदन मुरारी ऐसी विनती हमारी सुनि
लीला गुनगान ध्यान मो मति पगी रहै।
कर्मवश जौन जौन लोग जौन जन्म लैहौं
युगल उपासना की वासना जगी रहै॥१॥

भावै ब्रजलीला विनोद मोद चाव नित
सुनौं हित चित सौं अति आनन्द हुलसिवौ।
बेझर की रोटी टैंटी गस्सा महेरी भरि
छकौं नित लोट पोट ब्रजरज तन कसिवौ॥
'शुककवि' युगलमन्त्र रसना निरन्तर कहै
सुन्दर स्वरूप दृग रूप रस चसिवौ।
कलप कलप युग युग वरस वरस मास मास
दिवस दिवस पल पल छिन दीजौ ब्रज बसिवौ॥२॥

साँचौ सनेह लाल तुमहीं करि जानत हौ
और जग देखी सब मतलव की यारी है।
सुत परिवार पितु पुरजन की प्रीत देखी
देखे मीत स्वजन सँगाती घर नारी है॥
तुमसौ निभैया ना सँगैया या जीवन कौ
याही सौं सरनि 'शुक' आवत तुम्हारी हे।
दीनन पै दया करि कृपादृष्टि वारि करि
ब्रज के बिहारी ऐती विनती हमारी है॥३॥

कैसैं गान ध्यान तेरौ सुमिरन बखानि करूँ
तन झुझुराय दीयौ ताप की लपट ते।
बुद्धि बौरावै नैंम धर्म व्रत नसावै
काम क्रोध को बढ़ावै घबराऊँ खटपट ते॥
'शुककवि' कौन जाय द्वारि पै पुकार कीजै
कोऊ ना बचायौ याकी छबीली छटपट ते।
विनती कन्हैया कोऊ और ना सुनैया अब
मोकूं बचावौ अपनी माया की झटपते॥४॥

येही गुनगान येही ध्यान येही सेवा जानि
प्रीत की प्रतीति प्रान प्यारे जू परखि लेहु।
विद्या बलहीन नाहिं साधन प्रवीन कछू
मोसे द्विज दीन को दया करि हरष लेहु॥

तुम्हरी कृपा कौ बल अमल विमल पाय
च्वये बुन्द बुन्द छन्द छलिया सरस लेहु।
'शुक' की है अरजी हे हरि जू सरनि आयो
विनती हमारी भेट भनित हरखि लेहु॥५॥

अनपढ़ अनट्ठ सठ लट्ठ सौ लखै जु लेहु
साधन न कीनौ विध्यौ बाधन बलाई मैं।
नैक ना रँगायौ सतसंग में उमंग अंग
राची कलेवर सौं कपट कलाई मैं॥

नांहि व्रत नैम आचार पूजा पाठ ज्ञान
अबलौं भटकायौ या पेट की पलाई मैं।
आजलौं हौं सुकृत कमाई हौं कमाई नाँय
लायौ हूँ कन्हाई द्वार कविता कमाई मैं॥६॥

अपनी माया के पींजरा में पालि प्रीतम जू
'शुक' कौं पहाड़ौ पाठ आपही पढ़ावत हौ।
ब्रज के बिहारी चूक गनियौं ना हमारी
या कृती के सुकरता धरता तुमहीं कहावत हौ॥

बुद्धिमति प्रचुर प्रदाता विधाता आप
सबही उर अन्तर में बैठकैं जनावत हौ।
मोसे अयान को सुवानी दै सुजानन की
आपने बखानन के गीत तुम गवावत हौ॥७॥

कविता कमाई जो कराई है कन्हाई तुम
जैसी दरसाई हमें साँच साँच कह दीजौ।
भक्ति है न भाव है न आखर अनूप युक्ति
मो जैसे कूर कौ कसूर मत धरि लीजौ॥

कृपा करि निहारौ भलौ बुरौ हौं तिहारी
जो भाई अनभाई कथि गाई सब सह लीजौ।
'शुक' की पढ़ाई जो भलि दरसाई परै
ब्रज के बिहारी भेट भनित लाल लै लीजौ॥८॥

॥ दोहा ॥

'शुक' वृन्दावन वास है यही एक सुख ऐंन
दरसन बिहारीलाल के पावै तन मन चैन।
'शक' पाहुने जो आइयौ तौ सुनियौ दै कान
वृन्दावन की झौंपरी अमरावती समान॥

'शुक' वृन्दावन आय है भीजै तन मन प्रेम
युगल कथा यमुना अचै दरसन बिहारी नैम॥
'शुक' भूल्यौ भटक्यौ फिर्यौ जैपुर दिल्ली गौन
वृन्दावन रस माधुरी लखी ना काहू कौन॥

(संगीत वादन)

मृदंग विलास

॥ कवित्त ॥

गायौ गुनी ता, दी, थुं, न्ना, किट तक धदगिन धा
तेरह पाटाक्षर मृदंग के बखानिये।
परनन समूह सौं नाद नद गूंज उठै
थाप के अलाप जाप जुगति सौं बजानिये॥

'शुककवि' आलिप्त, अडिड्त, गौमुखा, तिस्त
भरत बखान्यौ चार बाज विधि प्रमानिये।
देव वाद्य बार बार वन्दन अभिनन्दन करूँ
गुरुन बतायौ सोई छन्द मांहि गानिये॥१॥

पखावज प्रशिक्षण के शिक्षण प्रगट करौं
गुनिजन बखान्यौ सोई छन्द मांहि गाऊँ मैं।
अक्षर, विलेपन, मार्ग, कर्ण, यति, प्रस्तार
लय, गत, प्रहार, पाणिप्रहत जनाऊँ मैं॥

'शुककवि' मार्जना, संयोग, अलंकार, जाति
भरत के नाट्य मांहि, दृग दरसाऊँ मैं।
ऐते विषय वादन मृदंग के सुढंग करै
ताही को प्रचण्ड पद पंडित गनाऊँ मैं॥२॥

मर्दल, मृदंग, मुरज, मुइअंग, गौमुखा
पक्षवाज, पखावज, अंकिक प्रमान्यौं है।
जवाकार, पुच्छकार, हरद आकार ताकौ
उमा शिव संयुक्त नादब्रह्म गान्यौं है॥

'शुककवि' चार आठ शौडष बत्तीस अंग
गौरा सुत गणपति नैं गोद मोद मान्यौं है।
रिषी मुनी आदि नैं पुराननि प्रमान्यौ
ऐसौ वाद्य है मृदंग जाकूं विदुष बखान्यौं है॥३॥

दक्षिण स्वर शिव शक्ति उमा वामांग जानौ
नाद संयुक्त अह्लाद उपजावै है।
वीणा कौ वीर गम्भीर ध्वनि धवल धीर
गति में गयन्द की सी चाल उमगावै है॥
'शुककवि' याके उच्छिष्ट की कहाँलौं कहौं
खाय जोपै गूंगौ तौपै मूक मिट जावै है।
तत्, शुखिर, घन वाद्य परम प्रसिद्ध
ऐसौ सिद्ध अवनद्ध साज मृदंग कहावै है॥४॥

मेघ सौ गम्भीर नाद नद सौ प्रवाह पूरि
शान्तिरस धारा मनमोद उपजावै है।
परम पडार सौं प्रवीनता प्रत्यक्ष लखै
प्रवल पांडित्य ताकौ रूप दरसावै है॥
'शुककवि' गणपति मन भायौ उर लायौ
नृत्य ताण्डव बजायौ यासौं शम्भु मन भावै है।
तत्, शुखिर, घन वाद्य परम प्रसिद्ध
ऐसौ सिद्ध अवनद्ध साज मृदंग कहावै है॥५॥

॥ इति शुक-विलास॥